B.A. VIth Semester

Syllabus
(पाठ्यक्रम)

History (Modern World-1920 to 1960)
(आधुनिक विश्व 1920-1960)

Unit - I

1. सोवियत रूस की पंचवर्षीय योजनाएँ
2. हिटलर की विदेश निति
3. मुसोलिनी की विदेश निति

Unit - II

1. चीन- जापान युद्ध (1937- 1939)
2. द्वितीय विश्व युद्ध के कारण
3. संयुक्त राष्ट्र संघ (U.N.O) की सफलताएँ

Unit - III

1. शीत युद्ध
2. (अ) नाटो (ब) सीटो और (क) वार्सा की संधि
3. एशिया का उपनिवेशवाद

Unit - IV

1. इजराइल की स्थापना।
2. गुटनिरपेक्ष आन्दोलन
3. स्वेज नहर समस्या

Scanned with CamScanner

6 ½

* हिटलर की विदेश नीति *

प्रारम्भिक

(1889) अडोल्फ हिटलर का जन्म 20 अप्रैल 1889 को ऑस्ट्रिया नामक के ब्रॉन नामक स्थान पर हुआ। उसके माता-पिता निम्न श्रेणी के थे। बचपन में हिटलर को उचित शिक्षा नहीं मिल सकी। इसकी आकांक्षाएं महान थी, पर उसके पिता के पास इतना धन नहीं था, कि उन्हें पूरा किया जा सके। उसे चित्रकला का बड़ा शौक था उसकी इच्छा थी, कि साधारण स्कूल की शिक्षा समाप्त कर लेना और बाद में ऑस्ट्रिया की चित्रकला एकेडमी में प्रवेश किया जाय। उस की यह इच्छा अधुरी रह गई और वह आखिर कार 1912 में म्यूनिच चला गया और चित्र बनाकर अपना निर्वाह करने लगा। जिस समय प्रथम महायुद्ध का प्रारम्भ हुआ, वह म्यूनिच में ही था। उसका जन्म आस्ट्रिया में हुआ था, राष्ट्रीयता की दृष्टि से वह आस्ट्रियन था, पर युद्ध के शुरू होने पर वह जर्मन सेना में भर्ती हो गया। लड़ाई में उसके बड़ी योग्यता दिखाई, वीर-कृत्यों के कारण उसे अनेक उच्च सैनिक सम्मान भी प्राप्त हुए। जब लड़ाई में जर्मनी की पराजय हो गई और उसके नेताओं ने मित्रराष्ट्रों के साथ सन्धि कर ली, तो वह आपे से बाहर हो गया। उसका खून खौलने लगा। वह कहता था कि जर्मनी की पराजय का कारण उसके नेताओं की बुजदिली है। जर्मन सेना में अब भी इतनी शक्ति है कि वह अपने शत्रुओं को नीचा दिखा सकती है पर उसके नेता हिम्मत हार गये हैं

युद्ध की समाप्ति पर हिटलर ने राजनीति में प्रवेश करने का निश्चय किया। जर्मन जाति का जो घोर अपमान युद्ध में पराजय के कारण हुआ था, उसका प्रतिशोध करने के लिए एक भयंकर ज्वाला हिटलर के हृदय में जल रही थी।

सन- 1919 में के समय हिटलर ने नाजी पार्टी की स्थापना की ~~असे~~ और यहीं से हिटलर की राजकीय समय की शुरूवात हुई और इस पार्टी को जनता का साथ मिलतेही हिटलर ने अपने सोची-समजी कार्यो को छोड़ना प्रारंभ कर दीया।

(1) वर्साय संन्धी को समाप्त करना।
(2) जर्मन भाषा बोलने वाले जर्मन जातीके लोग जीस प्रदेश में रहते है ~~~~ उन्हें अपने साथ मिलाकर जर्मन राष्ट्र की स्थापना करना।
(3) जो विदेशी लोग जर्मन में स्थायी होने आते है उन्हें रोकना।
(4) सेना के विकास के लिए जो नियम वर्साय संन्धी हुआ था उन नियमों को हटाना।

इस प्रकार के अनेक कार्य हिटलर अपने नाजी पार्टी के साथ मिलकर किया। इस तरह हिटलर ने अपने विचारों को स्फुर्ती से आगे बढ़ाना चाहा मगर अंत: 1923 में उसे जेल में बंदी बना लिया गया।

जेल में रहते समय हिटलर ने "मेरा संघर्ष" नामक एक पुस्तक लिखी और अंत: यह पुस्तक नाजी पार्टी का धर्म पुस्तक बना दिया गया।

Scanned with CamScanner

नाजी पार्टी का उच्चतम संगठन, श्रेष्ठतत्त्व, नाजी व्यवस्था, सेना का विकास, आर्थिक विकास, सामाजिक विकास, नई शिक्षा का विकास, जनसंख्या में वृद्धि, इस प्रकार की अनेक कार्य सन - 1912 से 1933 तक अपने राज्य के विकास के लिए हिटलर ने पूरा रात : दिन एक कर दिया

स्वाभीर कर 1933 में प्रधान मन्त्री चाँसलर के बाद हिटलर जर्मनी का प्रधान मन्त्री पद पर आसिन हुआ। इस पद के साथ ही हिटलर के पास राजकीय व्यवस्था के संपूर्ण शक्ती अपने हाथो पर आने से वह विदेश नीती का रूप धारण कर लीया।

* हिटलर की विदेश नीति *

सन - 1933 के प्रारंभ में हिटलर प्रधानमंत्री ~~मंत्री~~ बन जाने के बाद उस ने अपने राष्ट्र के विकास के लिए जो नये - नये नीती योका प्रयोग किया उन में से एक यह विदेश नीती है।

① पोलेण्ड से सन्धि :-

जनवरी, 1934 मे पोलेंड के साथ सन्धि की. जिसके अनुसार दोनो राज्यों ने यह वायदा किया कि वे दस सालों तक एक दूसरे की वर्तमान सीमाओं का किसी भी प्रकार से उल्लंघन व आतिक्रमण नही करेंगे।

हिटलर चाहता था कि सबसे पहले वह आस्ट्रिया को विशाल जर्मन राष्ट्र का अंग बनाले।

ऐसा करने से पूर्व वह पोलैण्ड की ओर से निश्चिन्त हो जाना चाहता था। जर्मनी और पोलैण्ड की सन्धि का यही मुख्य प्रयोजन था।

(2) सार की उपलब्धि :-

~~हम पहले लिख चुके हैं, कि~~

पेरिस की शान्ति-परिषद् द्वारा सार के प्रदेश का शासन राष्ट्रसंघ की अधीनता में रखा गया था। और यह व्यवस्था की गई थी कि 15 साल बाद वहाँ इस प्रश्न पर लोकमत लिया जायगा कि यह प्रदेश जर्मनी के अन्तर्गत किया जाय या फ्रांस के। जनवरी 1935 में राष्ट्रसंघ के तत्वावधान में सार में लोकमत लिया गया। 90 प्रतिशत के लगभग सार-निवासियों ने जर्मनी के पक्ष में वोट दिया। हिटलर की यह भारी विजय थी, और इसने यह बात भली भाँति स्पष्ट कर दी थी, कि विविध प्रदेशों में निवास करने वाले जर्मन लोग नाजी आकांक्षाओं के पक्षपोषक हैं।

(3) स्ट्रेसा का समझौता :-

सार की उपलब्धि के कारण जर्मन लोगों में अद्भुत उत्साह का संचार हुआ। अब उन्होंने यह आन्दोलन शुरू किया, कि डान्टिसग, मेमल आदि जिन प्रदेशों में जर्मन लोगों का निवास है, वे भी सार के समान जर्मनी को प्राप्त होने चाहिये। इन सब प्रदेशों में नाजी पार्टी के संगठन को बहुत महत्व दिया गया। सबल नाजी पार्टी के कारण हिटलर की हिम्मत इतनी बढ़ गई, कि 16 मार्च 1935 को उसने स

अधिनायकों ने घोषणा कर दी कि भविष्य में जर्मनी वर्साय की सन्धि की किसी भी शर्त को मानने के लिये बाधित नहीं होगा।

हिटलर की इस घोषणा से ब्रिटेन, फ्रांस और इटली बहुत उद्विग्न हुए। उनकी सरकारों के प्रतिनिधि अप्रैल, 1935 में स्ट्रेसा में एकत्र हुए और उन्होंने परस्पर मिलकर यह समझौता किया कि वे सब क्रियात्मक उपायों का अनुसरण इस उद्देश्य को सम्मुख रख कर करेंगे, कि कोई राज्य पेरिस की शान्ति-परिषद् द्वारा कायम की गई व्यवस्था का प्रतिरोध न कर सके।

रूस और फ्रांस का समझौता :-

स्ट्रेसा में जो समझौता हुआ था, वह भी फ्रांस की दृष्टि में पर्याप्त नहीं थी। फ्रांस के राजनीतिज्ञ जर्मनी की शक्ति से बहुत चिन्तित थे, और राष्ट्रसंघ द्वारा वे अपने देश की रक्षा करने में समर्थ होंगे, इसका भरोसा उन्हें नहीं रहा था। अतः वे महायुद्ध (1914-18) से पूर्व की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का अनुसरण कर इस बात के लिये तत्पर हो गये थे, की रूस के साथ फिर से सन्धि की जाय ताकि फ्रांस और रूस दोनों मिलकर जर्मनी का मुकाबला कर सकें इस संधि (मई - 1935) द्वारा फ्रांस और रूस ने अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में एक दूसरे के साथ सहयोग करने और युद्ध की दशा में परस्पर सहायता करने का समझौता किया। कुछ समय बाद रूस ने चेकोस्लोवाकिया के साथ भी इसी ढंग की संधि करली। फ्रांस पहले ही 1924 में चेकोस्लोवाकिया के साथ सन्धि कर चुका था

(5) फ्रांको की सहायता :-

इटली 1936 में स्पेन में जनरल फ्रांको के नेतृत्व में जिस फैसिस्ट विद्रोह का सूत्रपात हुआ था, उस ~~पर स्पेन मामले अध्याय में प्रकाश डालेंगे~~ समय रूस, ब्रिटेन और फ्रांस, स्पेन की लोकतन्त्र [illegible] के पक्षपाती थे, और जर्मनी व इटली फ्रांको के साथ थे। स्पेन में भी फैसिस्ट व्यवस्था स्थापित हो जाए यह बात जर्मनी और इटली दोनों के लिए ही लाभदा[illegible] थी।

(6) जर्मनी और ब्रिटेन की सन्धि :-

रूस और फ्रांस में सन्धि हो जाने की बात ब्रिटेन को अच्छी नहीं लगी। ब्रिटेन के राजनीतिज्ञ इस समय यह अनुभव करते थे, कि यूरोप की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में फ्रांस की स्थिति बहुत प्रबल हो गई है। मध्य और पूर्वी यूरोप के छोटे राज्यों के अतिरिक्त इटली और रूस के साथ भी सन्धि कर लेने के कारण फ्रांस का गुट बहुत शक्तिशाली हो गया है। जर्मनी ने ब्रिटेन की इस मानसिक दशा से लाभ उठाया, और दोनों राज्यों ने जून 1935 में एक सन्धि कर ली, जिसके अनुसार ब्रिटेन ने यह स्वीकार कर लिया, कि जर्मनी अपनी सैन्य शक्ति में वृद्धि कर सके, बशर्ते कि वह अपनी नौसेना को ब्रिटेन की नौसेना से 35 प्रतिशत से अधिक न बढ़ाए। ब्रिटेन का विचार था कि जर्मनी की स्थल व वायु शक्ति उस

जर्मनी की स्थल व वायु शक्ति उसके अपने हित लिए विघातक नहीं है। यदि जर्मनी की जलशक्ति अधिक न बढ़े तो वह ब्रिटेन के लिए खतरा साबित नहीं हो सकता।

रोम-बर्लिन-ए-क्सिस का निर्माण :-

अबीसीनिया के युद्ध द्वारा उत्पन्न परिस्थितियों ने इसमें भी उन्हें परस्पर सहयोगी बना दिया। राष्ट्रसंघ की प्रेरणा से अबीसीनियन युद्ध के समय ब्रिटेन, फ्रांस आदि राज्यों ने इटली का आर्थिक बहिष्कार कर दिया था। जर्मनी राष्ट्रसंघ का सदस्य था, और न उसके आदेशों की कोई परवाह करता था। उसने इस अवसर पर इटली की सब प्रकार से सहायता की। अबीसीनियन युद्ध के समय फ्रांस को विवश होकर ब्रिटेन का साथ देना पड़ा था, अतः इटली ने यह भली-भाँति अनुभव कर लिया था की जर्मनी ही उसका असली मित्र है। अक्टूबर, 1936 में जर्मनी और इटली ने मिलकर एक समझौता किया, जो इतिहास में 'रोम-बर्लिन-एक्सिस' के नाम से प्रसिद्ध है। इस समझौते द्वारा ये दोनों राज्य परस्पर घनिष्ठ मित्र बन गये, 1939-45 के महा-युद्ध में भी वे साथ रहे।

64

एंटी - कम्युनिस्ट पैक्ट :-

रोम - बर्लिन - टोकियो के निर्माण के कुछ समय पश्चात् नवम्बर - 1936 में जर्मनी के साथ जापान ने संधि की जो एंटी - कम्युनिस्ट या "एंटी - कॉमिन्टर्न पैक्ट" कहलाती है। इस द्वारा जापान और जर्मनी ने मिल कर कम्युनिस्ट रूस का प्रतिरोध करने का निश्चय किया था। इस संधि के तहत अन्तरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट संगठन की गतिविधि से एक दूसरे को अवगत कराते रहेंगे, उसके प्रयत्नों से आत्मरक्षा के लिए एक दूसरे को परामर्श देते रहेंगे और इस प्रयोजन से जो पग उठाने का वे निश्चय करें उनमें एक दूसरे के साथ सहयोग करेंगे।

* मूल्यांकन *

'अडोल्फ हिटलर' यह एक श्रेष्ठ शासक था जो जर्मनी देश को विश्व में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त कराने के लिए वह रात दिन एक कर दिया। इटली, जापान, स्लोवाकिया और कुछ पास के राष्ट्र, लिथुआनिया, लैटविया, फिनलैण्ड, एस्थोनिया और इन सभी का स्वातंत्र्य न समाप्त करते हुए उन्हें अपने राजयोग में संधियों के द्वारा जर्मन को बलिष्ठ राष्ट्र बनाने की कोशिश की, अपने राष्ट्र की विकास के लिए उन्होंने सामाजिक नीति, राजकीय नीति, आर्थिक नीति को का प्रयोग किया उन में से एक विदेश नीती यह नीती इतिहास में हिटलर की विदेश नीती के रूप में छा गया।

Scanned with CamScanner

6th sem

* मुसोलिनी का विदेश नीति *

प्रारम्भिक

"बेनितो मुसोलिनी" का जन्म 1883 में हुआ था। उसका पिताजी लुहार का काम करता था, और विचारों की दृष्टि से क्रांतिकारी व समाजवादी था। मुसोलिनी ने अपनी जवानी खूबसूरत के कई वर्ष इसने स्विट्जरलैण्ड में बिताए जहाँ वह "क्रान्ती-संघो" की स्थापना में लगा रहा। उसकी क्रांतिकारी विचारों से मुसोलिनी को स्विट्जरलैण्ड छोड़ना पड़ा और वह इटली वापस आ गया। वहा भी उसने अपने क्रांतिकारी कार्यों को जारी रखा। 1908 में वह गिरफ्तार कर लिया गया। मगर जेल से छूटने के बाद इटली छोड़कर ट्रेन्त चला गया। वहाँ उसने एक नया समाचार-पत्र जारी किया। यह पत्र न केवल समाजवादी विचारों का प्रचार करता था, पर साथ ही [illegible] का भी आन्दोलन करता था। मगर इसे भी छोड़ना पड़ा। अपने क्रांतीकारी स्वभाव से वह अपने राष्ट्र के लिए कुछ न कुछ करना चाहता था। मुसोलिनी बड़े जोश से अपने सिद्धान्तों का प्रचार करने में लगा था। वह कहता था - आज 'फैसिज्म' एक पार्टी है, एक फौज है, एक संगठन है। पर यह काफी नहीं है। इसे इटली की आत्मा बनकर रहना चाहिए।

फैसिस्टों को सम्बोधित करके वह कहा करता था - की तुम खतरनाक बनकर जीवन बिताओ। अगर मैं आगे बढ़ता हूँ, तो मेरा अनुसरण करो और मैं पीछे हटता हु तो मुझे गोली मार दो। मैं शान्ति में विश्वास नहीं करता। जिस प्रकार

माता को गर्भ धारण का कष्ट उठाना पड़ता है वैसे ही पुरुषों को युद्ध का कष्ट उठाना चाहिए।
अतः 1921 में इटली में फासिओं का जाल-सा बिछ गया।
पार्टी के सदस्यों की संख्या 1919 में 17,000, 1920 में बढ़ कर 30,000, व 1921 में बढ़कर 3,07,000 तक पहुंच गई।
इस समय इटली में उपस्थित सरकार को मुसोलिनी ने घोषणा की-की, या तो इटली की सरकार हमारे हाथ में आ जाएगी, और नहीं तो हमें रोम के ऊपर चढ़ाई करनी होगी। मुसोलिनी का क्रांती का देश के प्रति भाव को समझते हुए इटली सरकार के मंत्रीमंडल और प्रधान मंत्री "जिओलित्ती" ने इस्तीफा दे दिया था।
अंत मुसोलिनी इटली का प्रधानमंत्री 1922 में बन गए।
अपने राष्ट्र को विश्व में प्रतिष्ठी राष्ट्रों में से एक प्रतिष्ठित राष्ट्र बनाना चाहता था और यही कारण मुसोलिनी ने बहुत सी नीतियों का उपयोग किया उनमें से एक विदेश नीती है।

* मुसोलिनी का विदेश निती *

इटली को विश्व में प्रतिष्ठित राष्ट्र बनाने के लिए जो निती मुसोलिनी ने अपनाई वह आगे की ओर बताई गई है।

(1) फ्यूमवर विजय :-

वर्साय की सन्धि होने से फ्यूम शहर के प्रति इटालियन लोगों के मन में राष्ट्र की

भाग उठी और मुसोलिनी और इटली के जनता की मांग उठी कि फ्यूमा शहर इटली को मिल जाए। मगर व्हर्साय की संधि के बाद अंततः Dr. अन्नुनसीओ अपने राष्ट्रप्रेमीयों की मदत से फ्यूम शहर अपने राष्ट्र में मिला लिया। मगर कुछ समय बाद मुसोलिनी सत्ता प्राप्त करने के बाद युगोस्लोव्हीया से तहमोल करकर 'फ्यूम' शहर को इटली में शामिल करा दिया।

ऑस्ट्रिया के साथ मित्रता की संधी :-

जर्मनी में हिटलर सत्ता प्राप्त करने से उन्हें लगता था की ऑस्ट्रिया जर्मन में शामिल हो जाते चूकी जर्मनी और ऑस्ट्रिया यह दोन्हो राष्ट्र जर्मनवंश के ही थे। अगर ऑस्ट्रिया जर्मनी में शामिल न होता तो जर्मन सेना इटली के सीमा तक पहुंच जाती। यह जर्मन सेना अगर इटली के सीमा तक आती तो वह इटली को हानी उठाना पडता और यह हानी मुसोलिनी नही चाहता था। इसी लिए ऑस्ट्रिया के साथ मित्रता की संधी करली

इस सन्धि में ऑस्ट्रिया को जर्मनी के विरुद्ध संरक्षण देना। ऑस्ट्रिया को युद्ध के प्रति शस्त्र, और अन्य क्षेत्र में सहयोग देना. मगर हिटलर की शक्ती के आगे मुसोलिनी ने आगे कुछ करने की अनुमती दे दी।

③ मुसोलिनी - लावल संधि :-

इटली की सत्ता मुसोलिनी के हाथ में जाते ही इटली और फ्रान्स का संबंध में त्रुटियाँ की बारिश हो गई। फ्रान्स की लोकतंत्र के बारे में मुसोलिनी यह आलोचक था। इसी के चलते मुसोलिनी ने "नाइस कॉर्सिका" प्रदेश की फ्रान्स से मांगों का प्रस्ताव रखा। इस प्रस्ताव से और संबंध बिगड़ गए। मगर फ्रान्स का परराष्ट्रमंत्री और मुसोलिनी ने जनवरी 1935 में एक चर्चा के बाद मत भेदों मिटा दिया गया। और इसी समय अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र पर हिटलर का उदय होने से फ्रान्स को भी इटली के साथ संबंध प्रस्थापित करना पड़ा और साथ सलोख्या से संबंध... मुसोलिनी को लावल संधि कर इसी के लिए ... पड़ा।

④ रोम - बर्लिन - टोकियो अक्ष :-

अबीसिनी पर आक्रमण के सभी राष्ट्र से इटली को निषेध कर दिया गया, मगर अकेला राष्ट्र जर्मनी सिर्फ इटली की ओर खड़ा रहा। यह दोन्हों राज्यों ने स्पेन के जनरल फ्रैंकोल को मदत इसी कारण से अंतरराष्ट्रीय राजकारण पर जर्मनी और इटली एक दूसरे को सहायक रूप धारण कर लिए। इस समय मुसोलिनी को अंदाज लगाना ... कि कौन मित्र है और कौन शत्रु इन सबकी ... अध्ययन करने के बाद मुसोलिनी ने जर्मनी से

समझौता, जब मुसोलिनी जर्मन गया तब उसके राष्ट्र निर्णय लिया कि वह जर्मनी - जपान सन्धि में शामिल होना चाहा। और इसी प्रकार से राष्ट्र जर्मनी, जापान और इटली ये तीन राष्ट्रों का रोम - बर्लिन - टोकियो सन्धि के नाम से जाना गया।

कोर्फ्यू बेट की प्राप्ती :-

27 अग 1923 को इटालियन सैनिकों को ग्रीक के सरहद्दी पर ग्रीक लुटारों की ओर से संघर्ष की इटालियन सैनिकों को मार दिया गया। तब यह संघर्ष की बात मुसोलिनी के राष्ट्रसंघ की ओर न लिजाते हुए। यह युद्ध नौकाओं को भेजकर ग्रीस के कोर्फ्यू बेट पर विजय प्राप्ती की। और ग्रीस को नुकसान की भरपाई की मांग कर दी। इस वक्त से ग्रीस की ओर से इटाली को 50 लाख लिरा इतना भरपाई के तौर पर मिली। इस घटना से मुसोलिनी के आक्रमक रूप पुरे विश्व के सामने आ गया। इस तरह के अनेक आक्रमक कार्यो के रूप में मुसोलिनी ने अपना चेहरा बदल दिया।

डोडकानीझ पर आक्रमण :-

बालकन प्रदेश, पाश्चीमी एशीया और आफ्रीका में साम्राज्यवादी का विस्तार हो यह इच्छा शक्ती इटली की थी।

यह इटली का स्वप्न पेरिस शांति परिषद में टूट गया। इंग्लैंड एवं फ्रांस सभी क्षेत्र पर अपना नियंत्रण रखने ... इटली का स्वप्न / इच्छा पूरा होना बड़ा मुश्किल था। ... मुसोलिनी के हाथ में सत्ता प्रस्थापित होने से कि... भी कठिनाइयों का परवा न करते हुए उन्होंने भू-मध्य ... समुद्र के इलाके में अपना नियंत्रण प्रस्थापित करने ... मन ठान लिया।

इसी को मध्य नज़र रखते हुए प्रथमतः मुसोलिनी ने भू-मध्य सागर में स्थित डोडेकानीज़... बेट पर आक्रमण करके उस पे इटली की सत्ता स्थापित कर दिया गया। डोडेकानीस बेट पर नाविक ... नाविक तल की निर्मिती कर दी गई। सिसिली एवं ट्रिपोली यह मुसोलिनी ने नाविक और विमान क्षेत्र एवं ... का निर्माण कर दिया गया। इसी के साथ अल्बानिया ... को नाविक, आर्थिक मदत देना शुरू कर दिया गया। ... यह कार्य करते हुए भू-मध्य एवं अटलांटिक सागर ... पर अपनी शक्ती का केंद्र प्रस्थापित करना ... अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रों पर युद्ध का खतरा पैदा करना इस प्रकार के उद्दिष्ट मुसोलिनी के थे।

⑦ पोप के साथ समझौता :-

यह समझौता फरवरी 1929 में मुसोलिनी ने पोप के साथ कर दी। इस समझौते के अनुसार

(1) पोप इटली की स्वतन्त्रता को स्वीकार करें, और इटली वेटिकन प्रासाद, सेन्ट पीटर्स के गिरजे और सकल आंदोलनों पर पोप के स्वतन्त्र शासन को स्वीकार करे। पोप विदेशों में अपने राजदूत नियत कर सके, और अन्य राज्यों के राजदूत अपने यहाँ रख सके।

(2) इटली के सब बिशपों की नियुक्ति पोप द्वारा की जाय, पर पोप बिशपों की नियुक्ति करते हुए पहले इटालियन सरकार से यह जान ले कि राजनीतिक दृष्टि से इटालियन सरकार को इन नियुक्तियों के विषय में कोई एतराज तो नहीं है।

(3) पोप द्वारा नियुक्त इटालियन बिशपों का वेतन इटली की सरकार द्वारा दिया जाय।

(4) इटली के शिक्षालयों में धार्मिक शिक्षा देने के लिये जिन शिक्षकों को नियत किया जाय, वे पोप द्वारा स्वीकृत हों।

(5) चर्च की सेवा में नियुक्त कोई व्यक्ति राजनीतिक दलबन्दी में हिस्सा न ले सके।

सन् - 1929 के इन समझौतों को, जिन्हें 'लेतेरन अकोर्ड' कहते हैं, इटली की जनता को बहुत सन्तोष हुआ। और इनके कारण फैसिस्ट दल और मुसोलिनी की लोकप्रियता में बहुत सहायता मिली।

* मूल्यांकन *

मुसोलिनी के नेतृत्व में फॅासिस्ट सरकार देश की उन्नति के लिए निः सन्देह उपयोगी व महत्वपूर्ण कार्य कर रही थी देश प्रेम और राष्ट्र-भक्ति बहुत व महान बाते है, पर जब उनका अतिशय हो जाता है, तो उनका बहुत परिणाम साम्राज्यवाद होता है। मुसोलिनी के नेतृत्व में इटली के लोग भी साम्राज्य-विस्तार की उत्कट महत्वाकांक्षा से ओतप्रोत हो गये थे। वे चाहते थे कि, फ्रांस और ब्रिटेन के समान उनका भी विशाल साम्राज्य हो। प्राचीन रोम साम्राज्य का पुनरुद्धार उनका आदर्श था। इसीलिए ने अबीसीनिया पर आक्रमण किया। आफ्रीका में एक विशाल राज्य को जीत कर इसने साम्राज्य विस्तार की अपनी लालसा को शान्त कर लिया, पर इससे जो विकट अन्तर्राष्ट्रीय समस्याएँ उठ खड़ी हुई, उन्होंने मुसोलिनी और उसके फॅासिस्ट अनुयायियों को खाक में मिला दिया। ~~इटली के~~ इटली के साम्राज्य-विस्तार सम्बन्धी प्रयत्न, कि मुसोलिनी ने जिस नये सिद्धान्त का विकास किया था उसकी अतिशयता ही उसके पतन का कारण हुई।

Cimester 6th

Scanned with CamScanner

✡ द्वितीय विश्व युद्ध के कारण ✡

प्रास्ताविक :-

सन 1918 इ में युरोप मों प्रथम महायुद्ध की समाप्ति हुई थी। इस प्रथम महायुद्ध ने पुरे जग को विनाशकारी घटनाओं से महायुद्ध का अनुभव से परिचित करा दिया था।

सन 1919 से 1939 इ. तक इस समयावधी मे जग या राष्ट्र एक दुसरे के गुप्तमय संधी के चपेट मे गया था। एक राष्ट्र दुसरें राष्ट्र के विश्वास में न रह गया था। 21 साल बाद 1939 इ. में युद्ध की आगी ने फिर से युरोप को व्याप्त कर लिया। इस समय प्रत्येक राष्ट्र अपनी सुरक्षता के लिए अनेक राष्ट्रों से गुप्तमय संधी कर नये शस्त्रों का विकास में बढोतरी करवाना। प्रथम महायुद्ध में जो राष्ट्रो का विनाश हुवा था, उन राष्ट्रो के मन विजमय राष्ट्रो के प्राति युद्ध की भावना प्रज्वलीत होना। पुरा जग युद्ध के बारूद से भर गया था।

सन- 1939 के समय एक तिनके की आवश्यकता थी, सिर्फ उसे एक चिंगारी के रूप में कार्य कीया जर्मन राष्ट्र ने आखिर वह तिनके के रूप में तात्कालिक जर्मन राष्ट्रने हुकुमशाहा हिटलर के नेतृत्त्व पर पोलैण्ड पर आक्रमण किया और इस जर्मनी को महायुद्ध का पुरा महाविनाश समयावधीके युद्ध ने द्वितीय महायुद्ध का रूप धारण कर लिया।

द्वितीय विश्व युद्ध के कारण ✡

✡ द्वितीय विश्व युद्ध के कारण

व्हर्साय की संधी :- प्रथम महायुद्ध के समाप्ति के बाद

आर्थिक राष्ट्रप्रमुख मुद्दों विलसनके आपकी चौदा तत्वो का विजयी राष्ट्रों के साथ मतलकर व्हर्साय की संधी की। यह संधी जर्मन के लिए बहुत ही अन्याय से भरा हुआ था। तह के बाद जर्मनी के विदेशी वसाहतीयों को निकाला गया। मजर्मनी प्रदेश को बहुत ही सिमित कर दिया गया। सैन्य पर प्रतिबंधित कर दिया गया। पहले महायुद्ध में हुआ नुकसान की भरपाई का भांडा सिर्फ जर्मनी के उपर गया। इस नुकसान की भरपाई इतानि बड़ी थी की वह जर्मन मगर हर वर्ष इसे भरपाई के माध्यम से बदलने कोशीस करता मगर वह नही बदल पाता। इस तरह की जर्मन के लिए एक बहुत बड़ी सोची गई साजिश की संधी थी। इस संधी को बदलने के प्रयास पर जर्मन के कुद्ध नेता और जनता ने बहुत से क़दम उठाए जो जरूरी थी। इस व्हर्साय के संधी को तोडकर राष्ट्रीय स्वा आर्थिक विकास, अनेक राष्ट्रोसे अपना संबंध बढाने वाल संधी करना इस तरह की बहुत सी अपेक्षा जर्मन जनता और कुद्ध नेताओं के मन में थी। आखिर कार इस संधी को तोडने में जर्मन हुकुमशहा हिटलर के नेतृत्व में चिंगारी से ज्वालामुखीमें परिवर्तित हो गया।

(2) जागतिक साम्राज्यवाद की वृद्धी :-

पहले महायुद्ध में जर्मनी ने जो वसाहत को गवाया उसे पुन्ह प्राप्त करने जो व्हर्साय की संधी में गवाया हुआ था उसे पुरी तरह से प्राप्त करने की कोशीस में हिटलर ने जर्मनी प्रजासत्ता को विनाश करके जर्मन साम्राज्यवाद की घोषणा की। औद्योगिक वृद्धि करने के लिए कच्चे माल और पक्के माल की आयात

तत्वों लीए आंतरराष्ट्रीय के बाजार पेठ को आवश्यक समझा
कीयगया। जर्मनी के बरती हुई लोकसंख्या के लीए भू-प्रदेश की
था। विख्यात आवश्यकता थी। इस तरह के मूलभूत कारणों से व्यापार के
गया ए वस्ताहतीयों को जितने के लीए हर शक्ति शाली राष्ट्र
। जो होड़ की रोड में खड़ा हुआ। आशीया और आफ्रीका खंड में
में ऊ विकासमय राष्ट्रोंने यह स्पर्धा के माध्यम से खड़े थे उन में से
ऊपर लंड, जर्मनी, जापान, इटली और बहुत से राष्ट्र इस तीव्र मय
वहे स्पर्धा ने आखिर कार द्वितीय महायुद्ध के रूप में वृद्धि करने के
दलने ए युद्ध जन्य परीस्थितीयों का निर्माण करवा दिया।

लोकशाही और हुकुमशाही राष्ट्रों का संघर्ष :-

अमेरिकन राष्ट्रध्यक्ष
वुड्रो विल्सन चौदा तत्वों पर समावेशी शस्त्र संधी करके
पहले महायुद्ध की समाप्ति हुई। इस शस्त्र संधी पर
हस्ताक्षर करने वाले राष्ट्र सिर्फ प्रजासत्ताक
होना चाहिए इस तरह का नीयम विल्सन ने हस्ताक्षर
करने वाले राष्ट्रों के प्रती रखा। इन नियमावली को
ध्य नजर रखते हुए हस्ताक्षर करने वाले राष्ट्र ऑस्ट्रीया,
मनी, बल्गेरीया और अन्य राष्ट्रों पर प्रजासत्ताक की
स्थापना कर दिया गया।

परंतु युद्ध के बाद आर्थीक समस्या
ओं के कारण प्रजासत्ताक स्थिती अस्थिती सा हो गया।
लन वृद्धि और बेकारी को तोड के लीए, मोटे तौर पर
हुकुमशाही की आवश्यकता थी। इस तर की दृष्टीकोन से
आखीर कार इटली और जर्मनी में हुकुमशाही ने जन्म
लीया।

इन हुकुमशाही से अनेक छोटे-छोटे राष्ट्रों की स्वातंत्र्य हुकुमशाही राष्ट्रों के चपेट में आ गया और इन हुकु शाही का पुन्ह रूप से जर्मनी के राष्ट्रवाद हित इसका पुरा फायदा उठा लीया।

(4) इंगलंड का अनुनयवादी रूप :-

सन - 1917 में रशीयन क्रांति के बाद युरोप में साम्यवादी विचारधारायों का आस्तित्व - क्रांति समाप्ती की ओर बढ़ता हुआ चला गया। मगर लोक शाहीवादी राष्ट्रों के मन में घबराट का वातावरण निर्माण हुआ। आखीर का जर्मन से हिटलरने साम्यवादीयों के स्थिरता को बिखर कर रख दिया इस बिखरता से थोड़ा स्थिरता प्राप्त हुआ। लोकशाहीवादी राष्ट्रों को थोड़ा स्थिरता प्राप्त हुआ। इस क्षेत्र से इंगलंडने अनुनयवादी रूप का प्रारंभ कर दिया। जर्मनी जैसे हुकुमशाही राष्ट्र को थोड़ा सा पुरे जग में से कुछ प्रदेश मिलता है और इस से पुरे जग में शांती छा जाती है तो इसी शांती को मध्य नज़र रखते हुए जर्मनी को थोड़ा प्रदेश देना चाहिए ऐसा इंगलंड ने समजा मगर इटली, जर्मन ने इसे उल्टी नीती की ओर इसे विलय समज लीया और जर्मनी के और आक्रमक रूप धारण कर लीया।

सन - 1938 में ऑस्ट्रिया को जर्मन ने जीतने के बाद सभी राष्ट्र इंगलंड जैसे सतर्क हो गए मगर आगे चलकर हिटलर ने झेकोस्लोव्हाकीयाको जीत ध्यान लगाते हुए पोलंडपर आक्रमण कर दिया और घटना द्वितीय महायुद्ध के रूप से बहुत ही महत्व कांक्षी प्राप्त

साम्यवाद के आंन्दोलन में वृद्धि :-

1917 में रूस की जनक्रान्ति द्वारा साम्यवाद के आन्दोलन को बहुत बल मिला था। जर्मनी में नाजीज्म और इटली में फासिज्म का प्रादुर्भाव जहाँ लोकतन्त्रवाद के विरुद्ध प्रतिक्रिया थी, वहाँ साथ ही साम्यवाद के विरुद्ध भी थी। यद्यपि ये प्रतिक्रियावादी आन्दोलन अत्यन्त प्रबल होते हुए भी देर तक टिक नहीं सके थे, क्योंकि इनकी ...ता मानव समाज की प्रगति की प्रमुख धारा के प्रतिकूल थी। इसीलिये विश्व संग्राम (~~1939~~ 1939 - 45) की समाप्ति पर साम्यवादी प्रवृत्तियाँ और अधिक प्रबल हो गई।

अमेरिका का अलिप्तता रूप :-

अमेरिका प्रथम महायुद्ध में प्रवेश करने से युद्ध की समाप्ती हुई थी प्रथम महायुद्ध से पूर्व जग जिन घटनाओं की ओर बढ़ रहा था उस समय अमेरिका ने जग की ओर ध्यान न देते ... अपना विकास करता रहा। युद्ध के बाद ... अपना जग के ~~आर्थिक राजकीय~~ साथ कुछ राजकीय संबंध नहीं इस उद्देश्य का विचार अमेरिकन राष्ट्र- ... अमेरिका अलिप्ततावादी ...यक्ष हार्डिंग से लेकर हुवर तक ... का विचार किया।

अगर यूरोप में जो जंग ने जन्म लिया और संघर्षता को बढ़ावा दिया इस संदर्भ में अगर

Scanned with CamScanner

अमेरिका शामिल होता तो युद्ध में नेतृत्व वाले राष्ट्रों का इतनी ताकद न थी कि वह युद्ध को दे और उसका नेतृत्व कर सके। यही कारण है की अमेरिका आलिप्ततावादी रूप स्विकारने से उग्र वादी राष्ट्रोंने पुरे जग को एक बहुत बडे द्वितीय विश्व युद्ध के समकक्ष खड़ा कर दिया।

7) नि:शस्त्र करण परिषद का विफलता :-

राष्ट्रसंघ के मुल उद्देश्यो में से शस्त्र कपात एक बहुत ही मूलभूती कार्य का उद्देश्य था। इस उद्देश्य की ओर से जिनेव्हा, लंदन परिषद, अंतरराष्ट्रीय नि: शस्त्री करण परिषद नियम के साथ इसे सफलता पुर्वक सफल बनाना चा मगर यह सफल न बन सका। प्रथम विश्व युद्ध के बाद अने राष्ट्र एक दूसरे के संघर्ष में आने से अपने राष्ट्र के सुरक्षता को बाधित के लिए बहुत से गुप्त संधी होने लगी। इन गुप्त संधी से कसी भी राष्ट्र का एक दुसरे के प्रति विश्वास न रह सका इसी कारण से प्रत्येक राष्ट्र अपनी सुरक्षता को बढ़ाने हेतु वह नये शस्त्रों का निर्माण करने लगा और अपनी छाप जग में छोड़ने का प्रयास कीया। इस नि:शस्त्र करण परिषद की विफलता को बढ़त मिली। और इस विफलता के कारण द्वितीय महायुद्ध को और बाधित करने में मदत मिली।

तात्कालिक कारण :-

विश्व-संग्राम का तात्कालिक कारण जर्मनी का पोलैण्ड पर आक्रमण था पर यदि यह आक्रमण न भी होता, तो भी संसार में लोकतन्त्रवाद और अधिनायकवाद का साथ-साथ रह सकना सम्भव न होता। किसी न किसी प्रश्न पर उनमें लड़ाई छिड़ती ही। वस्तुतः विश्व-संग्राम में दो प्रवृत्तियों व दो आदर्शों के बीच में संघर्ष चल रहा था। एक प्रवृत्ति वह थी, जिसे फ्रांस की राज्यक्रान्ति ने पैदा किया था, दूसरी प्रवृत्ति उसकी प्रतिक्रिया के रूप में थी, जिसके प्रतिनिधि हिटलर और मुसोलिनी थे। आखिरकार 1 सप्टेबर 1939 को हिटलर ने पोलैण्ड पर आक्रमण कर दिया और इस के से द्वितीय महायुद्ध की शुरुवात हुई इसे ही तात्कालिक कारण माना गया।

मुल्यांकन *

दुसरे महायुद्ध का अध्ययन करने के बाद उसके कारण और इसके समाजिक, आर्थिक, राजकीय क्षेत्रों पर हुए परिणामों हमें महा विनाशकारी घटनाओं को सामने प्रस्तुत करता है। आने वाले वर्षों में दुबारा इस तरह के घटनाओं का जन्म न हो इस लिए पूरी दुनिया प्रयत्नशील कार्यों को बढ़ावा दे रहा है।

इस क्षेत्र के लीए संयुक्त अंतरराष्ट्रीय संघटनाओं
निर्माण किया गया और पूरी दुनिया के लीए प्रत्येक
क्षेत्र के लीए नियमावली तयार कर दिया गया
द्वितीय महायुद्ध के बाद जीव हानि और रासायनिक
शस्त्रों का दुरुपयोग संसार में कम कराया
जा रहा है

इस तरह के बहुत से कारण और उसके परि
हमें और आनेवाली दुनिया के लीए क्या करना हो
एक बहुमूल्य उद्देश को ज्ञान देने वाली घटना
का अध्ययन था हमें ज्ञान देकर जाती है।

(Q. 3)

संयुक्त राष्ट्रसंघ : संरचना (U.N.O)

प्रस्तावना *

प्रथम महायुद्ध की समाप्ती के बाद जो परिस्थितीयों का निर्माण हुआ था। इस को मध्य नजर रखते हुए दुबारा मानवजातीपर इस तरह का समस्या [illegible] न हो, इस लिए विश्व में तीर विचारों ने बहुत से प्रयत्न किए. जिस में राष्ट्रसंघ की स्थापना, नि: शस्त्रीकरण परिषद और अन्य पुरे जगत में शांती को बढ़ावा देने के लिए बहुत से प्रयत्न किया गया। मगर कुछ राष्ट्र की समस्याओं के आखिर कार सन-1939 में द्वितीय महायुद्ध पुरे जग को अपने चपेट में ले लिया। इस युद्ध में पुरे जगत को हिलाके रख दिया और इस युद्ध में नये शस्त्रों का भी बहुत बड़ी संख्या में विकास हुआ था। युद्ध की शुरुवात में दुसरी ओर में कुछ महान्यायवादी विचारक सोचते थे की यह युद्ध कसे समाप्त कर दिया जाए।

सन - 1939 से 1945 युद्ध के चलते हुए बहुत बड़ी संख्या में अनेक परिषदों का निर्माण किया गया। सन. 24 ऑक्टोबर 1945 में आखिर कार संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना कर दिया गया।

पहली बार 1942 में 26 राष्ट्रों ने एक साथ आकर इस संयुक्त राष्ट्र शब्द का प्रयोग किया गया।

सन - 1944 में डंबार्टन ओक्स में अमेरिका ब्रिटन, रशीया, अमेरिका इन 4 राष्ट्रों का परिषद के संयुक्त राष्ट्र संघ कच्चा आराखड़ा तैयार कर दिया गया। सन - 1945 सनफ्रॅन्सीस्को में 50 राष्ट्रों की परिषद बुलायी गयी। इस पर 49 राष्ट्रोंने हस्ताक्षर किया! इसी के साथ संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना 24 ऑक्टोबर की घोषणा कर दिया गया।

* संरचना *

(1) आमसभा :-

यह संपूर्ण विश्व की आमसभा के रूप में इस की अपनी पहचान है। यह UNO का सबसे महत्वपूर्ण और सबसे बड़ा अंग है। इस महासभा में सभी अपने - अपने राष्ट्र की प्रतिनिधी के रूप में कार्यरत है। प्रत्येक राष्ट्र को खुद के अधिकतम सदस्य 5 प्रतिनिधी के रूप में महासभा में भेजे जाते है मगर प्रत्येक राष्ट्र को सिर्फ एक मात्र मत प्राप्त है। वर्षा में एक बार महासभा का अधिवेशन भरना चाहिए ऐसा नियम बना दिया गया है।

सुरक्षा समीती के विनंती पर अधिवेशन बुलाया जा सकता है। इस महासभा के कार्यों का विभाजन वर्गों में किया गया है।

(1) चर्चा करके के बाद निर्णय लेना।

(2) विभाजित समितीयों के प्रतिनिधी का चुनाव

संविधानपत्रक को मंजूरी प्रदान करवाना।
संयुक्त राष्ट्र संघटनेका मसुधा में बदल करना।

सुरक्षा समीती :-

सुरक्षा समीती का मुख्य कार्य
अंतरराष्ट्रीय शांतता एवं सुरक्षितता इनका रक्षण करना। विश्व में शांती को धोका निर्माण पर विचार विनिमय या चर्चा करना। शस्त्र एवं अण्वस्त्रों के नियंत्रण प्राप्त करना, समितियों के कारभार पर विशेष रूप से ध्यान देना, अंतरराष्ट्रीय न्यायालय के न्यायाधीशों का चुनाव करवाना, सरचीटणीस की निवृत्ती करना इस प्रकार की बहुत सी विश्वस्तरीय कार्यो यह सुरक्षा समीती कि ओर से होता है।

विश्वस्तर पर शांतता भंग होने इस क्षेत्र में सुरक्षा समीतीको सतर्क रहना होता है। विश्व स्तर पर शांती को भंग करने वाले राष्ट्रोंपर कार्यवाई करने का अधिकार इस सुरक्षा समीती पर सोपीत कर दिया जाता है।

आर्थिक एवं सामाजिक मंडळ :-

आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक समस्या का विश्वस्तरीय क्षेत्र पर छुडाना और बेहतर रुजूती और समृद्धी जीवन बनाना।

जग के शांतता में प्रेमय पारिस्थितीकी का निर्माण करवाना और निःशस्त्र की दृष्टी में कमी लाना इस का ध्येय संयुक्त राष्ट्रसंघ की है

आर्थिक एवं सामाजिक मंडल की सदस्य संख्या कुल 27 है और इन में से हर ~~वर्ष~~ तीन वर्ष पर आमसभा 9 सदस्यों की नियुक्ति कर सकता है वर्ष में इस मंडल की बैठक दो बार है अपने अध्यक्ष ~~का~~ चुनाव इसी मंडल से करवाना है मानव जाती का विकास करना इसका ~~का~~ उद्देश्य

(14) विश्वस्त मंडल :-

अंतरराष्ट्रीय ~~[illegible]~~ में क्षेत्र की महत्व कार्य का निवारण यह विश्वस्त मंडल करता है और इन प्रशासकीय कार्यपर देखरेख रखने कार्य महासभा करती UNO संघ की 86वीं कलम के अनुसार विश्वस्त मंडल सभासदोंका नियुक्ती की जाती है

इस समितीका मुख्य उद्देश्य राजकीय, आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिकदृष्टीयों का विकास करना, स्वराज और स्वतंत्रता को ~~[illegible]~~ महसूस करवाना इस प्रकारके उद्देश्य को पुरा करने के लिए विश्वस्त मंडल ~~का~~ को चुना गया है

अनेक राष्ट्रों का अहवालपर विचार करना, अपील की सुनवाई करना, विश्वस्त प्रदेश की सुरक्षता इस प्रकार के महत्वपूर्ण कार्य विश्वस्त मंडल को करना होता है

Scanned with CamScanner

अंतरराष्ट्रीय न्यायालय :-

अंतरराष्ट्रीय न्यायालय यह
[अं]तरराष्ट्रीय कानूनी क्षेत्र की ओर से बहुत ही महत्वपूर्ण
इस न्यायालय में कुल - 15 न्यायाधीश होते हैं, और इस
UNO के सभासद द्वारा 9 वर्षों के लिए इन न्यायाधीशों
चुना जाता है। न्यायाधीश पद पर नियुक्त हुआ व्यक्ति
निष्णात, विधिज्ञ, उच्च प्रतिष्ठा का नैतीक एवं ~~सा~~
[उ]च्चतम न्यायाधीश के लिए पात्र होना चाहिए।

इस अंतरराष्ट्रीय न्यायालय की स्थापना सन - 1899 में
[हे]ग नामक स्थान पर कर दिया गया।

इस न्यायालय में योग्यता
[प्राप्]त करने वाले व्यक्तियों के नामों की सूची UNO के
[से]क्रेटरी जनरल द्वारा जारी किया जाता है। हर तीन वर्ष बाद इस
[न्]यायालय से पांच न्यायाधीश को सेवा निवृत्त कर दिया
जाता है। पद धारण करने से पूर्व नियुक्ती प्राप्त करनेवाला
व्यक्ती को निष्पक्षपाती का शपथ ~~लेना~~ ~~करना~~ लेना होता
[है।] सरन्यायाधीश की नियुक्ती इन्ही न्यायाधीशों से की
जाती है और इन न्यायाधीशों की गणपूर्ती संख्या 9 है।
[अं]तरराष्ट्रीय क्षेत्रों पर आनेवाली विभिन्न समस्याओं का
[नि]वारण करना, राष्ट्र - राष्ट्रों के बिच के समस्याओं का निपटारा
[कर]ना इस प्रकार के अनेक कार्य अंतरराष्ट्रीय स्तर पर यह
[उच्]चतम न्यायालय द्वारा किया जाता है।

इस न्यायालय
का निर्णय अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र ~~पर~~ अंतिम होता है अगर
[कि]सी भी राष्ट्र के इस अंतरराष्ट्रीय न्यायालय के निर्णय पर
[आप]त्ती आता है तो वह समस्या का निवारण सुरक्षा समिती

के ओर से किया जाता है और इस न्यायालय को निर्णय न बदलते हुए उसे अंतिम करार कर दिया जाता है।

(vi) सचिवालय :-

सचिवालय को संयुक्त राष्ट्र संघ का प्रशासक नियंत्रण केंद्रबिंदु के रूप में सचिवालय को देखा जाता है। सचिवालय यह अमेरिका के न्यूयॉर्क में मनहट्टन क्षेत्र के एम्पायर स्टेट इस कार्यकारी गृह में स्थित है। इस सचिवालय में चार हजार से भी अधिक नौकरशाही दिन का पुरा कारभार चलाते है। सचिवालय का प्रमुख सरचिटणीस है, सरचिटणीस UNO का प्रशासक अधिकारी के रूप में कार्य करता है। और इस सचिवालय का पुरा दैनिक कार्य के लिए सरचिटणीस जवाब देह रहता है। महासभा मिरो को नियुक्त करता है। सुरक्षा मंडल की शिफारीश तहत ही महासभा सरचिटणीस को नियुक्त करता है। सरचिटणीस का समय पाच वर्ष तक का होता है। सचिवालय मय कार्य करने वाले सभी कर्मचारी पुरे राष्ट्र से चुने जाते है। सरचिटणीस को सचिवालय बहुत ही महत्व पूर्ण कार्य करना होता है, सरचिटणीस के उत्तराधिकारी करके आठ दुय्यम सचिव होते है। संयुक्त राष्ट्र संघ का आर्थिक अहवाल को प्रस्तुत करना मुख्य सचिव का महत्वपूर्ण कार्य होता है। सचिवालय को विभिन्न क्षेत्रो पर बाटा गया है जैसे - प्रशासक कार्य, सदस्यता समन्वय, संधी - करारे, आर्थिक क्षेत्र, राजकीय बहुत से क्षेत्रों को सचिवालय को ही संभालना होता

अन्य अंतरराष्ट्रीय संस्थाएँ :-

अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में अनेक विभाजित संस्थाएँ स्थापित कर दि गई है। इनमें आर्थिक संस्थाएँ, सामाजिक संस्थाएँ, पर्यावरणीय संस्थाएँ, अन्न संस्थाएँ, शिक्षा संस्थाएँ, नि:शस्त्रीय संस्थाएँ, आरोग्य संस्थाएं इस प्रकार की बहुत सी संस्थाएँ हमें UNO के अंग के रूप में विभाजित क्षेत्रों में दिखाई जाती है। यह संस्थाएँ अपने-अपने कार्यों को बहुत ही गंभीरता से उच्चतम कोटी का रूप धारण करके अपने कार्यों का निपटारा करती है। इन्हीं संस्थाओं के माध्यम से UNO पुरे विश्व पर ध्यान केंद्रीत कर पाया है। इन संस्थाओं की स्थापना ... प्रति निधि भेजकर अनेक संस्थाओं ने अनेक राष्ट्र में अपने ... विकासित रूप धारण कर दिया है। इन संस्थाओं के सदस्यों को आमसभा के माध्यम से नियुक्त कर दिया जाती है।

UNO ने उच्चतम क्षेत्र के संस्थाओं को चार भागों में विभाजित कर दिया है।

1. तंत्रात्मक संस्थाएँ
2. सामाजिक और मानवतावादी संस्थाएँ
3. आर्थिक संस्थाएँ
4. विभिन्न समस्या निवारण संस्थाएँ

इस प्रकार के अनेक संस्थाएँ ऊपर दिए गए चार भागों में समावेशी कर के अनेक संस्थाएँ UNO के क्षेत्र में कार्य रत है।

* मुल्यांकन *

प्रथम एवं द्वितीय विश्व युद्ध का आपदा जैसे प्रकार जान की बली, आर्थिक, सामाजिक, अंत: ... वैसे क्षेत्र का विनाश इन्ही विश्व युद्ध के कारण हुआ था और आखिर कार यह UNO (संयुक्त राष्ट्र संघ) की स... 24 ऑक्टोबर 1945 को हुआ। इस संघ के माध्य से पुरा विश्व के अनेक राष्ट्र एक-दूसरे के संपर्क में आगए। स्वातंत्र, विकासीत क्षेत्र, नि:शस्त्र, विश्व की प्रमुख्य समस्या को प्रथम / प्राथमिकता देना UNO के समक्ष और इन्ही समस्याओं को पुर्ण रूप से न्यायीक दृष्टिकोण से कार्य ही संयुक्त राष्ट्र के अपना कर्तव्य समाजा।

हमें यह नजर आता है की संयुक्त राष्ट्र संघ की वजह से पुरे विश्व में शांती, सुव्यवस्था और अनेक समस्या ओ का निप... करने की कोशीस विश्व के क्षेत्र पर हो रहा है। कोई राष्ट्र शांती, सुव्यवस्था को उथल-पुथल करने के लिए उसे दस बार सोचना होता है। इस प्रकार के बहुत स... बहुमूल्य कार्यो का फायदा हमें UNO संस्था से ही प्राप्ती हो रहा है। इसी को मध्य नजर में रखते हुए हमारे लिए संयुक्त राष्ट्र संघ बहुत ही उपयोगी साबित हुई है।

Unit – III (Q.7 (क))

प्र०-1 वार्सा संधि पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर :- वार्सा संधि माने साम्यवादी राष्ट्रो ने नाटो संधि को दिया हुआ करारा जवाब है। जिस प्रकार नाटो संधि के प्रवास अमेरिका ने अपना स्थान मजबूत किया, इसी धरती पर आधारित रशिया (रूस) को भी उसकी आवश्यकता महसूस हुई।

दिसंबर 1954 में साम्यवादी राष्ट्रो का एक सम्मेलन मास्को में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में युद्ध के संरक्षण के हित के लिए एक (सामूहिक) करार निश्चित किया गया। इस सम्मेलन में ही वार्सा संधि का जन्म हुआ।

इस संधि में निम्नलिखित राष्ट्र सम्मलित थे। रूस, पूर्व जर्मनी, पोलंड, हंगेरी, चेकोस्लोवाकिया, बलगेरिया, अल्बानिया, रुमानिया यह आठ पूर्व यूरोप के साम्यवादी राष्ट्रो ने 14 मई 1955 में पोलंड कि राजधानी वार्सा यहा पर इस करार पर सभी ने हस्ताक्षर किये।

वार्सा करार माने पूर्व यूरोपियन संधि संगठन के नाम से जाना जाता है। इस संधि कि अवधी 20 वर्ष कि थी। इस संधि का मुख्य उद्देश्य परस्पर संघर्ष शांति के मार्ग से जुडा हुआ था। वार्सा संधि के चौथे कलम अनुच्छेद में कहा गया है कि यदि किसी सदस्य राष्ट्रो के ऊपर एक जैसे हमला होता है तो सभी सदस्य राष्ट्र के ऊपर में आक्रमण समझा जाएगा। वार्सा संधि यह नाटो करार से एक अधिक अधिक संघ था। क्योंकि नाटो संधि के सभी राष्ट्र लोकशाहीवादी नहीं थे, लेकिन वार्सा संधि के सभी राष्ट्र एक जात साम्यवादी विचारधारा के थे। और यह रशिया को अनुपालन करते थे।

(अ) नाटो करार :-

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद में विश्व २ गुटों में विभाजित हुआ। भांडवलशाही का नेतृत्व अमेरिका की तरफ गया और साम्यवाद का नेतृत्व रशिया के तरफ गया। इसलिए अमेरिका व रशिया का महत्व बढ़ने लगा। इन्हें महाशक्ति का स्थान प्राप्त हुआ। दोनो राष्ट्रो में सैद्धांतिक मतभेद होने के कारण शीतयुद्ध जैसी परिस्थिती निर्माण हुई। इन राष्ट्रो ने पावर ऑफ वीटो का गलत इस्तेमाल करके संयुक्त राष्ट्र के कामकाज में हस्तक्षेप करना शुरू किया। इसीलिए अमेरिका ने विविध राष्ट्रो से विचार विनिमय करके नाटो करार यानि उत्तर अटलांटिक संधि संघटन NATO अस्तित्व में आया। इस संघटन में अमेरिका, कॅनडा, इंग्लैंड, फ्रांस, इटली, बेलजीयम, डेनमार्क, होलैंड, लक्सेमबर्ग, आइसलैंड, नॉर्वे व पुर्तगाल इत्यादि सदस्य राष्ट्र है। ४ अप्रैल १९४९ में वाशिंगटन यहा पर सभी राष्ट्रो ने संधि पर हस्ताक्षर किए। नाटो का मुख्यालय पॅरीस यहा पर स्थित है। १९52 में ग्रीस एवं तुर्कस्थान यह नाटो करार में सम्मिलित हुआ। १९55 में पश्चिम जर्मनी सदस्य हुआ।

नाटो संधि के मुख्य १४ अनुच्छेद है। वह निम्नलिखित है :-

1) आंतर्राष्ट्रीय संघर्ष के समय बल प्रयोग न करके शांति का मार्ग अपनाना।

2) संधि को बाधक होगा ऐसा कोई भी करार सदस्य राष्ट्र नही करेगा।

3) कोई भी युरोपियन राष्ट्र नाटो करार में सम्मिलित हो सकते है। लेकिन सभी सदस्य राष्ट्रो की सम्मती

Scanned with CamScanner

आवश्यक है।

20 साल के बाद कोई भी सदस्य राष्ट्र इस संधि का
5) त्याग कर सकता है। इसके लिए अमेरिका को
वर्ष पहले सूचना देना आवश्यक है।

नाटो करार का मुख्य उद्देश्य अमेरिका और रशिया यह 2 विश्व की महासत्ता को सामने रखकर लिया गया है। इन राष्ट्रो ने पॉवर ऑफ वीटो का गलत इस्तेमाल करके विश्व शांती के लिए यह धोखादायक है। इसीलिए साम्यवादी राष्ट्रो ने नाटो संधि का वर्णन करते हुए कहा गया है कि "संयुक्त राष्ट्रसंघ के आसन के नीचे रखा हुआ बॉम्ब" ऐसा वर्णन किया गया है।

(ब) सीटो करार :

शीत युद्ध के समयान यूरोपियन राष्ट्रो ने तनाव की स्थिती पैदा हुई और शीतयुद्ध के समय में एशिया प्रदेश में भी इसका परिणाम हुआ। सीटो करार लागु करने का मुख्य उद्देश्य आग्नेय एशिया में साम्यवाद का प्रचार रोकने हेतु इस संगठन का निर्माण किया गया है। 8 सितंबर 1954 में सीटो करार अस्तित्व में आया। इस संगठन में अमेरिका, इंग्लैंड, फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया, न्युजीलैंड, पाकिस्तान, थाईलैंड, फिलीपिन्स ये सदस्य राष्ट्र है। सीटो का मुख्यालय फिलीपिन्स की राजधानी मनीला में है। सभी सदस्य राष्ट्रो ने इस संधि पर हस्ताक्षर किए। सीटो करार को मनीला संधि के नाम से जाना जाता है।

Scanned with CamScanner

मूल्यांकन - इस संधि का मूल्यांकन करते समय ऐसा प्रतीत होता है कि इन सदस्य राष्ट्रों का इतिहास, भौगोलिक परिस्थिति और धर्म भी भिन्न है। फिर भी यह राष्ट्र सम्मिलित हुए। पंडित नेहरू ने इस करार के संबंध में अपने विचार रखे। वे कहते हैं कि शक्तिशाली राष्ट्रों का प्रभाव आग्नेय एशिया में बढ़ेगा और वहां कि आर्थिक स्थिती कमजोर होगी और इसलिए यह राष्ट्र अमेरिका को ~~कर्ज~~ कर्ज मांगेंगे। और उनको मदद देने के बदले अमेरिका का इस क्षेत्र में प्रभाव बढ़ेगा। और दुसरी बात यह है कि साम्यवाद को रोकने के लिए अमेरिका इस क्षेत्र में लश्करी अड्डे स्थापित करेगा।।

Unit - III (Q. 1)

~~प्र~~Q.1 शीत युद्ध क्या है?

शीत युद्ध का अर्थ - इसका अर्थ स्पष्ट करते हुए फ्लेमिंग महोदय ने लिखा कि "युद्ध स्थल में नहीं लड़ा जाता परन्तु मानवों के मस्तिष्क में होता है, एक (यानि) अन्य मस्तिष्कों को नियंत्रित करने का प्रयास करता है।"

इस संबंध में अमेरिका के विदेश मंत्री जॉन फास्टर डलेस ने लिखा है कि "शीत युद्ध नैतिक मूल्यों के लिए नैतिक धर्मयुद्ध था - बुराई के विरुद्ध अच्छाई का गलत के विरुद्ध सही का तथा नास्तिकता के विरुद्ध धर्म का।" लुई हॉल ने अपनी पुस्तक 'The cold war as History' में लिखा कि "शीत युद्ध दो गुटों के बीच तीव्र तनाव कि स्थिती थी, यह सशस्त्र युद्ध से

थी अधिक भयंकर था, शीत युद्ध के विभिन्न पक्ष समस्याओं का हल निकालने में शीत युद्ध कि नीति का प्रयोग करते थे।

गुन्थर के अनुसार :- "परमाणु युग में शीत युद्ध संघर्ष का एक ऐसा रूप है जो कि गरम युद्ध के स्तर से नीचे लड़ा जाता है।" नेहरू ने इसे स्नायु युद्ध कहा था।

शीत युद्ध को अगर सारांश में परिभाषित किया जाता तो उसे "शान्तिकालीन शस्त्रविहीन युद्ध" व निरन्तर राजनीतिक तथा राजनीतिक उपायो से एक-दूसरे को नीचा दिखाने का प्रयास करते रहते थे। उनके मध्य निरन्तर सैनिक प्रतिद्वंदिता तथा गुप्तचरी की प्रक्रिया चलती रहती थी। संक्षेप में शीत युद्ध एक ऐसा मनोवैज्ञानिक युद्ध था जिसमें प्रतिपक्ष के प्रभाव क्षेत्र को कम करने तथा अपने समर्थकों की संख्या में वृद्धि करने का प्रयास किया जाता था।

शीत युद्ध की एक खास विशेषता यह थी कि दोनो देशो ने एक दुसरे पर बम वर्षा नहीं की। वे एक-दुसरे के विरुद्ध खुलकर प्रचार अवश्य करते थे। एक शक्तिगुट का नेतृत्व संयुक्त राज्य अमेरिका के हाथों में था, जिसे अमरीकी गुट या आंग्ल-अमरीकी गुट या पश्चिमी गुट या लोकतांत्रिक गुट के नाम से जाना जाता था। साम्यवादी लेखक और नेता साम्राज्यवादी गुट अथवा पूंजीवादी गुट कहकर उसकी निन्दा करते थे। दुसरे गुट का नेता सोवियत संघ का था।

शीतयुद्ध के कारण

शीत-युद्ध के निम्नलिखित कारण है।

1) संघर्षों कि अनिवार्यता :- हमेशा से दो देशों के बीच सम्बन्धों के निर्धारण में संघर्षों का प्रमुख रूप से महत्वत रहा है "सामान्य राज्य समन्वय नहीं प्रतिस्पर्धिता है।

2) शून्यता कि अवधारणा :- लुई हाल का तर्क है कि - "शांति स्थापना करने के स्थान पर शीत-युद्ध प्रारंभ होने का प्रमुख कारण जर्मन शक्ति को यूरोप से पुरी तरह समाप्त कर दिया जाये। यह स्पष्ट है कि इस प्रकार का शून्य एक सप्ताह भी चल नहीं सकता है। इसको किसी-न-किसी प्रकार से भरना ही था"।

3) वैचारिक तत्व :- दोनो देशों (संयुक्त राज्य अमेरिका तथा सोवियत संघ) के बीच वैचारिक मतभेद होने का प्रमुख कारण साम्यवाद तथा पूंजीवाद पर आधारित उदार लोकतंत्र तथा मार्क्सवाद पर आधारित समाजवादी राज्य व्यवस्था में इतना पारस्परिक मतभेद था कि इन विचारों में संघर्ष होना स्वाभाविक था।

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर शीत-युद्ध का परिणाम

1) विश्व का दो गुटो में विभाजित होना :- शीत-युद्ध के फलस्वरूप विश्व दो गुटो में बंट गया। जिसमें पूंजीवादी गुट का नेतृत्व अमेरिका ने किया। दुसरा गुट उन समाजवादी देशों का था जिनका नेतृत्व रूस ने लिया।

2) परमाणु युद्ध कि संभावना का खतरा :- अमेरिका द्वारा जापान पर गिराये गये परमाणु बम से उत्तेजित होकर सोवियत संघ ने अस्त्र-शस्त्रों का बड़े पैमाने पर निर्माण करना प्रारम्भ कर दिया, जिसने विश्व के सभी देशों को परमाणु शक्ति विकसित करने के लिए प्रयत्नशील किया।

3) अविश्वास एवं आतंक का सृजन :- शीतयुद्ध के बाद राष्ट्रों को परमाणु युद्ध ने तो भयभीत किया और उनमें आतंक और विश्वास की कमी की स्थिती पैदा हो गयी।

Unit - IV (Q. 2)

प्रश्न - गुट निरपेक्ष आंदोलन के बारे में लिखिए।

उत्तर ⇒ गुट निरपेक्षता का अर्थ है कि दूसरे राष्ट्रों के साथ राजनीति से दूर रहकर तथा किसी प्रकार का सैनिक समझौता न करना बल्कि अपनी एक नई योजना को अपनाना ही गुटनिरपेक्षता है। गुटनिरपेक्षता यानि अलग रहकर योजना को क्रियान्वित करना।

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं जवाहरलाल नेहरू ने अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को व्यापक एवं प्रभावपूर्ण बनाने के लिए एक विशेष नीति गुट-निरपेक्षता अपनाई। इस अवधारणा का सीधा संबंध शीत-युद्ध से माना जाता है क्योंकि विश्व दो गुटो में बट गया था। द्वितीय युद्ध के बाद में संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत रूस के बीच में विरोध हो गया था। पं. जवाहरलाल ने 7 September 1946 को कहा था कि "हम अपनी इच्छा से इतिहास का निर्माण करेंगे" उन्होंने यह भी कहा था कि जहां तक सम्भव होगा हम समूह कि शक्ति राजनीति से दूर होंगे। नेहरू जी ने 1947 में फिर दोहराया था। भारत किसी भी शक्ति गुट में शामिल नहीं होगा।

प्रो. पी. डी कौशिक ने गुट निरपेक्षता के लिए असंलग्नता (non Alignment) का प्रयोग किया है। भारत कि गुट-निरपेक्षता कि नीति को कई विदेशी राष्ट्रों ने अपनाया। गुट-निरपेक्षता का यह सिद्धांत एक ऐसे महान राष्ट्र का उदय था जो अब उपनिवेशवाद से बाहर निकलकर शीत-युद्धो के दबाव को रोकना चाहता था।

भारत गुट-निरपेक्ष होते हुए भी 1962 में चीन के विरुद्ध और 1965, 1971, 1999 कारगिल

Scanned with CamScanner

में पाकिस्तान के विरुद्ध युद्ध करने पड़े। भारत फिर भी गुट-निरपेक्ष रहा।

भारत कि गुट-निरपेक्षता कि नीति

भारत कि नेतृत्व में सन् 1961 में गुट-निरपेक्ष आंदोलन का प्रारंभ किया। और औपचारिक रूप से गुट-निरपेक्ष आंदोलन का शुभारंभ प्रधानमंत्री नेहरू जवाहरलाल के राष्ट्रपति टीटो और मिस्र के राष्ट्रपति नासिर ने किया। बेलग्रेड में गुट-निरपेक्ष देशों का पहला सम्मेलन हुआ जिसमें 25 देशों ने भाग लिया और इसकी अध्यक्षता टीटो ने कि थी। प्रथम शिखर सम्मेलन में निम्नलिखित विषयों पर चर्चा कि गई।

1) वह राष्ट्र शीत-युद्ध से संबंध न रखता हो।
2) इसने किसी महाशक्ती के साथ में कोई संधि न कि हो।
3) इस देश कि भूमि पर विदेशी सैनिक अड्डा स्थापित न किया हो।
4) वह देश गुट-निरपेक्षता और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व कि विदेश नीति पर स्वतंत्र आचरण करने वाला हो।
5) वह देश उपनिवेशवाद और साम्राज्य का विरोध करता हो।

गुट-निरपेक्ष आंदोलन में शुरुवात के दौर में केवल 25 राष्ट्र सदस्य थे। इस आंदोलन कि सदस्य संख्या बढ़कर 2003 में 116 तक बढ़ गई। समय-समय पर शिखर सम्मेलन आयोजित किये गये। जिनमें अंतर्राष्ट्रीय राजनीति

और विभिन्न ज्वलंत प्रश्नों पर विचार किया गया था। और यह प्रयत्न किया जाता है कि आंदोलन के सभी देश एक समान दृष्टिकोण अपनाएं। 1961-2003 की अवधि में तेरह शिखर सम्मेलन हुए हैं। गुट-निरपेक्षता का औचित्य कम होने का कारण शीत-युद्ध का समाप्त होना है लेकिन यह अभी इतना भी कम नहीं हुआ कि है कि इसका महत्व ही न रहा हो।

Scanned with CamScanner

Unit – IV (Q.3)

प्र० ⇒ स्वेज नहर पर टिप्पणी लिखिए ?

स्वेज नहर पर लंदन परिषद

सन् 1799 में नेपोलियन बोनापार्ट ने मिश्र पर आक्रमण किया था उस समय उसके साथ में फ्रेंच इंजीनियर, चार्ल्स लापेरे था उन्होंने भू-मध्य सागर एवं लाल सागर इन दोनों सागरों को जोड़ने वाला स्वेज नहर कि कल्पना कि। प्रत्यक्ष यह योजना तैयार होने के लिए 70 साल लगे। उसके बाद में फ्रेंच इंजीनियर फर्डिनांड डी लेसेप्स इनके मार्गदर्शन एवं नेतृत्व में स्वेज नहर 1869 में तैयार हुआ। इस नहर को बनाने के लिए कंपनी के शेयर फ्रांस और इंग्लैंड ने खरीदे। आगे मिश्र सरकार पर आर्थिक संकट आने से कुछ शेयर बेचने को निकाले स्वेज नहर का अंतर्राष्ट्रीय महत्व को ध्यान रखते हुए जहुतांश बाहर का हिस्सा इंग्लैंड ने खरीदा और वहां पर इंग्लैंड ने अपना नियंत्रण प्रस्थापित किया और स्वेज नहर के माध्यम से धीरे-धीरे इंग्लैंड ने अपना नियंत्रण प्रस्थापित किया।

सन् 1953 में मिश्र में राजशाही समाप्त होकर मिश्र यह प्रजासत्ता राष्ट्र घोषित किया गया। 1956 में अब्दुल

कमाल नासेर यह अध्यक्ष था। इसके तरफ देश की बागडोर इसने संभाली। और इंग्लैंड और इजिप्त के बीच में 1954 से मतभेद होना प्रारंभ हुआ। स्वेज नहर के संदर्भ में 20 जून 1956 में स्वेज क्षेत्र से अपनी फौज निकालने को इंग्लैंड ने मान्य किया। इसलिए 26 जुलाई 1956 में अफ्रीका नासेर ने स्वेज नहर का राष्ट्रीयकरण घोषित किया गया। इस घटना का विरोध इंग्लैंड और फ्रांस ने किया। इस प्रश्न को सुलझाने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ के सुरक्षा परिषद में पैरवी कि गई तब सुरक्षा समिती ने यह निर्णय दिया कि स्वेज नहर पर इजिप्त का अधिकार है और यह नहर आंतरराष्ट्रीय यातायात के लिए खुला रहेगा इस समिती के निर्णय के बाद में इंग्लैंड और फ्रांस ने इजिप्त के विरुद्ध युद्ध कि घोषणा कि। भारत और रूस ने इजिप्त कि बाजू का समर्थन किया।

2 नवम्बर 1956 में संयुक्त राष्ट्र संघ के आम सभा में युद्ध बंद करने का प्रस्ताव स्वीकृत किया गया। यह प्रस्ताव अमेरिका ने रखा था। उस समय संयुक्त राष्ट्र संघ का महासचिव डॉग हैमर शील्ड का निर्णय था कि इजिप्त में युद्ध बंद करने के लिए 48 घंटे के अंदर संयुक्त राष्ट्र संघ कि शांती सेना उस प्रदेश में भेजी गई। शांति सेना आने से इंग्लैंड और फ्रांस ने अपनी-अपनी सेना वहा से हटा दी और स्वेज नहर पर इजिप्त के अधिकार में आ गया और इंग्लैंड के नियंत्रण से इजिप्त पूर्णतः मुक्त हुआ।